Paper - 5, BA-3.
Topic - लोक प्रशासन एवं समाजशास्त्र
Date - 17.07.2020
Seema Kumari, Asst. Prof. (Pol. Sc.), RMC VKSU.

लोक प्रशासन एवं समाजशास्त्र

लो प्र का सम्बंध सामाजिक शक्तियों से है। समाज मनुष्य से बनता है और मनुष्य सामाजिक वातावरण से प्रभावित होता है। किसी भी समाज में प्रयुक्त लो प्र सभी सफल हो सकता है जबकि वह उस समाज की व्यवस्था से भिन्न हो। सामाजिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर ही प्रशासनिक कार्य सफल हो सकता है। लो प्र का कार्य सेवा करना है। प्रशासन की समस्याओं को समझने के लिए व्यक्ति एवं उसके वातावरण को समझना नितांत आवश्यक है। समाजशास्त्र एक विस्तृत क्षेत्र है जिसमें से लो प्र अपना क्षेत्र खोजता है। समाजशास्त्र को लो प्र को दृष्टि मिलती है। प्रत्येक समाज की अलग-अलग विशिष्टतायें होती है जिसके संबंध में ज्ञान रखना प्रशासन का कर्तव्य है। रिग्स और प्रेस्थस जैसे अमेरीकी विद्वानों ने बहुत ही रूप से कहा है कि सामाजिक वास्तविकता की विशेषता समाज, राज्य व्यवस्था और उसकी प्रशासकीय व्यवस्था के श्रृंखला से ही ज्ञात होती है और सामाजिक वास्तविकता की प्रकृति ऐसी है कि इसमें कोइ विभेद नहीं किया जा सकता है। प्रशासन समाज का एक अंग है और उसी समाज के संदर्भ में कार्य करता है इसलिए जिस प्रकार समाज लक्ष्यों, मूल्यों और विश्वासों की व्यवस्था से संबंधित होता है उसी प्रकार प्रशासन भी इनसे संबंधित होता है। इस प्रकार यह पारस्परिक सम्बद्धता है। प्रशासन एक सहकारी प्रयास होता है जिसमें विभिन्न प्रकार के लोग लक्ष्यों की प्राप्ति में लगे रहते है। प्रशासन का क्लासकीय सिद्धांत यह मानता है कि मानव व्यवहार स्थिर होता है। जबकि समकालीन सिद्धांत मानव व्यवहार को गतिशील मानते हैं। प्रशासकों को समाजिकी समझने के लिए समाजशास्त्र द्वारा विकसित साधनों का उपयोग लो प्र के विद्वानों द्वारा किया जाता रहा है। इस क्षेत्र में भारतीय प्रशासकों के सामाजिक पृष्ठ-

Scanned with CamScanner

भूमि पर बी॰ सुब्रमण्यम का कार्य उल्लेखनीय है। कई संस्थाओं और विश्वविद्यालयों ने स्नातकोत्तर तथा अन्य पाठ्यक्रमों में सामाजिक प्रशासन का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित किया है। TISS जैसी प्रमुख संस्थाएं कल्याणकारी अभिकरणों के पदाधिकारियों के लिए आदिम जाति विकास जैसी विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है। राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान अखिल भारतीय सेवाओं के कार्मिकों के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रशासकों को ग्रामीण भारत के समाजशास्त्र से अवगत कराना होता है।

लोक प्रशासन एवं मनोविज्ञान

प्रत्येक कार्य की प्रेरणा मन से मिलती है। इसलिए कहा गया है कि मनोविज्ञान मनुष्य की उन आंतरिक शक्तियों का अध्ययन है करता है जो मनुष्य को अपने जीवन में अनुभव करने विचार करने तथा इच्छा करने की सामर्थ्य प्रदान करती है। एक निश्चित परिस्थिति में व्यक्ति का मस्तिष्क किस ढंग से काम करता है इसकी जानकारी मनोविज्ञान से मिलती है। लो प्र समाज में मानवीय प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। आधुनिक लो प्र के विद्वानों ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करना प्रारंभ किया है। लोक नीति को कार्यान्वित करने के लिए मानवीय मानसिकता जानना अनिवार्य है। औपचारिक संगठन के पीछे एक अनौपचारिक संगठन होता है जो प्रशासन को संचालित करने वालों के व्यक्तिगत दृष्टिकोणों और संबंधों का परिणाम है।

वर्तमान में लो प्र के क्षेत्र में मनोविज्ञान प्रवेश कर गया है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में मनोविज्ञान एक विषय है। एक कुशल प्रशासक के लिए यह आवश्यक है कि उसको मनोविज्ञान का ज्ञान हो क्योंकि उसका संबंध गतिशील प्राणियों से है जो परिस्थितियों

Scanned with CamScanner

के अनुकूल अपने व्यवहार को बदलते रहते हैं। वर्तमान में मनोविज्ञान का ज्ञान प्रशासक के लिए आवश्यक है जिसमें समूह मनोविज्ञान की प्रधानता है। समूह के क्रिया कलापों से प्रशासन का प्रतिदिन का संबंध है। जनहित के मुद्दों पर जनमत जानने में मनोविज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। अपराधियों का मनोविज्ञान जानकर प्रशासक योजना बनाता है। लोक प्र के अंतर्गत भ्रष्टाचार एवं मनोबल का अध्ययन किया जाता है जिसका सम्बंध मनोविज्ञान से है। मनोविज्ञान का अध्ययन प्रशासन के कुशलता से संचालन के लिए आवश्यक है।

Scanned with CamScanner